प्रातः क्लास 29-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे जन्म-जन्मान्तर और सतसंगों में गये हैं और यहां भी आये हुये हैं। वास्तव में इसको भी सतसंग कहा जाता। सत का संग तारे। बच्चों के दिल में आता होगा पहले हम भक्ति मार्ग के सतसंगों में जाते थे और अभी यहां बैठे हो। रात-दिन का फर्क भासता है। यहां पहले2 तो बाप का प्यार मिलता है। फिर बाप को बच्चों का प्यार भी मिलता है। अभी इस जन्म में अभी तुम्हारी चेंज हो रही है। तुम समझ गये हो हम आत्मा हैं न कि शरीर। शरीर नहीं कहेंगा कि हमारी आत्मा। आत्मा कह सकती है हमारा शरीर। आत्मा जानती है हम शरीर लेता हूं। अभी बच्चे समझते हैं जन्म=जन्मान्तर तो वह साधु महात्मा आर करते आये आजकल फिर पेशन पड़ा है साई बाबा, भहर बाबा .... वह भी सभी जिसमानी ही हो गये। जिसमानी प्यार में सुख तो होता ही नहीं। अभी तुम बच्चों का है रूहानी प्यार। रात दिन का फर्क है। यहां तुमको समझ मिलती है। वहां तो बिल्कुल हैं बेसमझ। अभी तुम समझते हो आकर हमको बाबा पढ़ाते हैं। वह सभी का बाप है। मेल-फिमेल सभी अपने को आत्मा समझते हैं। बाबा बुलाते भी हैं हे बच्चों। बाप रेसपाण्ड करेंगे हे बच्चों, तो फिर बच्चे भी रेसपाण्ड करेंगे ओ बाबा। यह है बाप और बच्चों का मेला। आत्माओं और परमात्मा का मेला। यह बच्चे जानते हैं यह बाप और बच्चों का वा आत्माओं व परमात्मा का मेल एक ही बार होता है। बाबा कहते रहेंगे। बाबा अक्षर बहुत ही मीठा है। बाबा कहने से ही वरसा याद आवेगा। तुम छोटे बच्चे तो नहीं हो। बाप को बोझ बच्चों पर पड़ती है। बाबा से क्या वरसा मिलना है। वह छोटे बच्चे तो समझ सके। यहां तो तुम जानते हो बाबा के पास आये हैं। बाप कहेंगे हे बच्चों। तो इसमें सभी बच्चे आ गये। बाप समझाते हैं जो भी आत्मायें हैं सभी घर से यहां आते हैं पार्ट बजाने। नम्बरवार बाप से जुदा होकर यहां पार्ट बजाने आये हैं। कौन2 कब पार्ट बजाने आते हैं यह भी बुद्धि में है। बाप समझाते हैं सभी को सेक्शन अपनी2 है जहां से आते हैं फिर पिछाड़ी में अपने2 सेक्शन में जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। बाप किसको भेजते नहीं हैं। आटोमेटिकली यह ड्रामा बना हुआ है। हरेक अपने2 धर्म में आते रहते हैं। बुध का धर्म स्थापन नहीं हुआ है तो कोई उस धर्म का आवेगा नहीं। पहले2 सूर्यवंशी चन्द्रवंशी ही आते हैं। जो बाप से अच्छी रीत पढ़ते हैं वही नम्बरवार सूर्यवंशी चन्द्रवंशी में शरीर लेते हैं। अभी जो इस समय हैं वह है सूर्यवंशी। वहां विकार की तो बात ही नहीं। योगबल से आत्मा आकर गर्भ में प्रवेश करती है। उस समय समझेंगे मेरी आत्मा इस शरीर में जाकर प्रवेश करती है। बूढ़े समझते हैं हमारी आत्मा योगबल से जाकर यह शरीर लेंगी। मेरी आत्मा अभी पुनर्जन्म लेती है। वह मां-बाप भी समझते हैं हमारे पास बच्चा आता है। उनको बच्चा होने वाला है। तो मालूम पड़ेगा बच्चे की आत्मा आ रही है। जिसका साक्षात्कार भी होता है। वह अपने लिए समझते हैं कि हम जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हैं। उनका बच्चा होने वाला होगा तो बाप समझेगा स्त्री के गर्भ में आत्मा आकर प्रवेश किया है। महसूस होगा ना। साक्षात्कार होता है बच्चा होने वाला है। ऊपर से हम आत्मायें आवेंगी। नये2 आते हैं। समझते हैं योगबल से आत्मा आकर इनकी गर्भ में प्रवेश करती है। शुरू से ही जान जाते हैं इन में प्रवेशता हुई है। समझ है बच्चा कैसे आता है कैसे प्रवेश करते हैं। समझते हैं हमको बच्चा होनेवाला है एक। जब 60 वर्ष के होते हैं उस अवस्था में बच्चा पैदा होता है। यह भी विचार उठते हैं ना। जरूर वहां का कायदा होगा बच्चा किस आयु में आवेगा। वहां तो सभी रेगयुलर चलता है ना। वह तो आगे चल कर मालूम पड़ेगा। ऐसे तो नहीं 15-20 वर्ष में कोई बच्चा होगा जैसे कि यहां होता रहता है। नहीं। वहां आयु ही 150 वर्ष होती है तो बच्चा कब आवेगा। जबकि जवानी होती है। आधा लाईफ से थोड़ा आगे। उस समय बच्चा आता है। क्योंकि वहां आयु बड़ी होती है। एक ही तो बच्चा आना है। फिर बच्ची भी आनी है। कायदा होगा। पहले बच्चा या बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहते हैं पहले बच्चे की ही आत्मा आनी चाहिए। पहले मेल पीछे फिमेल। 8-10 वर्ष का फर्क भी होता होगा। दोनों की आयु बड़ी है तो आने में भी जरूर फर्क रहेगा। 8-10 वर्ष देरी है

आवेंगे। आगे चल तुम बच्चों को सब सा० होना है। कैसे वहां के रसम-रिवाज़ हैं। यह सभी बातें नई दुनिया के लिए बाप बैठ समझाते हैं। बाप ही नई दुनिया का स्थापना करने वाला है। रसम-रिवाज़ भी जरूर सुनाते होंगे। आगे चल कर बहुत सुनावेंगे। और सा० भी होता रहेगा। बच्चे बच्ची कैसे पैदा होते हैं। कोई नई बात नहीं। तुम तो ऐसी जगह जाते हो जहां कल्प2 जाना ही पड़ता है। बेकुण्ठ तो अभी नज़दीक आ गया ना। अभी बिल्कुल ही नजदीक ही आकर पहुंचे हो। हरेक चीज़ तुमको नजदीक ही देखने में आवेंगे। जितना तुम योग में मजबूत हो जावेंगे। अनेक बार तुम ने पार्ट बजाया है। अभी तुमको समझ मिलती है जो ही तुम साथ ले जावेंगे। वहां के रसम रिवाज बाप को समझानी तो यहां ही है ना। सीखना यहां ही होता है। सभी को सा० होगा। वहां की क्या रसम रिवाज होगी। सभी जान जावेंगे। शुरू में तुमको सा० हुआ था कैसे शादी होगा। कैसे बच्चा पैदा होंगे सभी सा० होता था ना। उस समय तो अजन्म तुम अलफ बे पढ़ते थे। फिर लास्ट नम्बर में भी तुमको सा० होनी चाहिए। सो तो बाप बैठ सुनाते हैं। वह सभी देखने की चाहना तुमको यहां ही होगी। समझेंगे कहां शरीर जल्दी न छूट जाये। सभी कुछ देखकर जावें। इसमें आयु बढ़ाने लिए चाहिए योगबल। जो बाप से हम सभी कुछ सुनें। सभी कुछ देखें। जो पहले हो गये उनका चिन्तन नहीं करना है। वह तो ड्रामा का पार्ट है। तकदीर में नहीं था ज्यादा बाप से लेना। क्योंकि जितना2 तुम सर्विसएबुल बनते हो बाप को बहुत2 प्यारे लगते हो। जितना सर्विस करते हो जितना बाप को याद करते हो वह याद जमती रहेगी। तुमको बहुत मज़ा आवेगा। अभी तुम बनते हो ईश्वर के सन्तान। बाप कहते हैं तुम आत्माएं हमारे पास थे ना। भक्ति मार्ग में मुक्ति के लिए ही बहुत परिश्रम करते हैं। जीवन मुक्ति को तो जानते ही नहीं। उन सन्यासी गुरुओं को तो यह ईश्वरीय ज्ञान है नहीं। यह बहुत ही लवली ज्ञान है। बहुत लव होता है। बाप बाप भी है टीचर भी है सतगुरु भी है। सच्चा सुप्रीम बाबा है जो हमको 21 जन्म लिए सुखधाम ले जाते हैं। आत्मा ही दुखी होती है ना। दुःख-सुख आत्मा ही महसूस करती है। कहा भी जाता है मनःस्थिति मनःस्थिति। अभी बाप आये हैं हमको सभी दुःखों से दूर करने। अभी तुम बच्चों को बेहद में जाना है। सभी सुखी हो जावेंगे। सारी दुनिया ही सुखी हो जावेगी। ड्रामा में पार्ट है। उनको भी समझ गये हो। तुम कितना खुशी में रहते हो। बाप आया हुआ है हमको स्वर्ग में ले जाने लिए। हम सभी आत्माओं को स्वर्ग ले जावेंगे। बाप धीर्य देते हैं मीठे2 बच्चों मैं तुमको सभी दुःखोंसे दूर करने आया हूं। तो कितना ऐसे बाप पर प्यार होना चाहिए। सभी सम्बन्धियों ने तुमको दुःख दिया है। यह है ही दुखदाई सम्बन्ध। गरुड़ पुरान में दिखाते हैं ना बिच्छू टिण्डण बनते हैं, यह बनते है। फिर कहते हैं मनुष्य का जीवन है सब से उत्तम है। 84 लाख तो वैराईटी है। शास्त्रों में कितना गपोड़ा लगा दिया है। ऐसी2 बातें सुन तुम्हारी बुधि क्या हो गई है। बिल्कुल ही पत्थर बुधि बन गये हो। सुनने में तुमको बड़ी खुशी होती है। दुःख की बातें हो सुनते आये हैं। अभी बाप सभी बातें समझा रहे हैं। सारा सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। बाप ने समझाया है। अनेक बार समझाया है। और हमको चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। तो जो बाप हमको ऐसा विश्व का मालिक बनाते हैं उन पर कितना प्यार होना चाहिए। एक बाप को ही याद करते हो। बाप के सिवाय और कोई से सम्बन्ध ही नहीं। आत्मा को ही समझाना होता है। हम सुप्रीम बाप के बच्चे हैं। अभी हमको जैसे कि रास्ता मिला है फिर औरों को भी सुख का रास्ता बताना है। आधा कल्प के लिए। और ही मुना कल्प के लिए। तुम पर भी कुर्बान जाते हैं ना। क्योंकि तुम बाप को संदेश बताये सभी को सुख के दुःख दूर करते हो। तो समझते हैं इन्हों को यह नालेज सुप्रीम बाप से ही मिलती है। यह फिर हमको पैगाम देते हैं। हम फिर औरों को पैगाम देते हैं। पैगाम पहुंचाने बाप का परिचय देते सभी बच्चों को जगाते रहते हैं अज्ञान नींद से। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। ज्ञान और भक्ति अलग2 है। ज्ञान माना सज्ञान। भक्ति माना भक्ति। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। वही ज्ञान सिखलावेंगे ना। अभी तुम बच्चों को सिखला रहे हैं। तुम्हारे दिल में आता है बाबा हर 5000 वर्ष बाद आकर हमको जगाते हैं। जो दीवा है

सभी घृत बाकी जरा रह गया है। बुझने पर आ गया है इसलिए अभी फिर बाप ज्ञान घृत डाल दीवा जगाते हैं। आत्मा प्रज्ज्वलित होती है जब बाप को याद करती है। आत्मा में जो कट चढ़ी हुई है वह उतरेगी बाप को याद करने से। इसमें ही माया की लड़ाई चलता है। माया घड़ी2 भूला देती है। और कट उतना बन्द हो जाता है। बल्कि जितने उतरे थे उससे भी ज्यादा चढ़ जाती है। बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करो। तो तुम्हारे कट उतर जावेंगी। इसमें बड़ी मेहनत है। माया के तूफान बहुत आते हैं। जो कशिश करते हैं। इसलिए बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो। हम आत्मा हैं। बाबा के पास शरीर सहित तो जा नहीं सकेंगे। शरीर से अलग होकर ही जाना है। आत्मा को देखने से ही कट उतरेगी। शरीर को देखने से कट चढ़ती है। कब चढ़ती है कब उतरती है। यह चलता रहता है। कब नीचे कब ऊपर बड़ा नाजुक रास्ता है। यह होते होते कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में पाते हैं। मुख्य आंखें ही हर बात में धोखा देती है। इसलिए बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो और दूसरे को भी आत्मा देखो। फिर मिल को देखने से आंखों से बहुत धोखा होती है। इसलिए शरीर होते हुये भी देखना नहीं है। हमारी बुधि सुखाधाम और शान्तिधाम में लटकी हुई है। और दैवी गुण भी धारण करनी है। भोजन भी शुद्ध। देवताओं का पवित्र भोजन होता है ना। वैष्णव अक्षर विष्णु से निकला है। देवतायें कब गन्दी चीज थोड़े ही खाते होंगे। वैष्णव का भी मंदिर है। जिसको ना० भी शायद कहते हैं। अभी ल०ना० तो साकार ठहरे। उनको 4भुजा होनी न चाहिए। परन्तु भक्ति मार्ग में उनको भी चार भुजा देते हैं। इसको कहा जाता है बेहद का अज्ञान। समझते नहीं हैं चार भुजा वाला तो कोई मनुष्य हो नहीं सकता। सतयुग में भी दो भुजा वाले होते हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने पत्थर बुधि हो जाते है। कुछ भी समझते नहीं हैं। ब्रह्मा को भी दो भुजायें हैं। ब्रह्मा की बेटी सरस्वती उनको फिर मिला कर चार भुजा दे दिये हैं। अभी सरस्वती कोई स्त्री नहीं थी। यह है प्रजापिता ब्रह्मा। जितने बच्चे एडाप्ट करते जाते हैं उतनी ही भुजायें बढ़ती जाती है। ब्रह्मा की ही आठ भुजा, 10 भुजा, 20 भुजायें कहते हैं। विष्णु वा शंकर की नहीं। ब्रह्मा के बहुत भुजायें कहते हैं। क्योंकि बच्चे बढ़ते जाते हैं ना। भक्ति में क्या2 करते रहते हैं। समझ कुछ भी नहीं। बाप आकर बच्चों को समझ बनाते हैं। तुम कहते हो बाबा ने हमको आकर कितना समझदार बनाया है। शिव बाबा शिव बाबा तो कहते हैं ना। वह निराकार था। अभी भी तुम समझते हो वह निराकार है। परन्तु वह तो हमारा बाप है यह तो समझना चाहिए ना। किसका बाप है? सभी आत्माओं का। मनुष्य कितने पत्थर बुधि हैं। कहते हैं हम शिव का भक्त था। अच्छा शिव को क्या समझते थे। अभी तो तुम समझते हो शिव बाबा सभी आत्माओं का बाप है। इसलिए सभी उनकी पूजा करते हैं। पहले2 तो तुम भी शिव की पूजा करते थे। फिर आते2 कोई किसकी पूजा, कोई किसकी पूजा करते वृधि को पाते जाते हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मुख्य बात तो बाप कहते हैं मामेकं याद करो। तुमने बुलाया भी है हे पतित पावन आकर हमको पावन बनाओ। सभी पुकारते ही रहते हैं। पतित-पावन .... यह भी गाते रहते थे। बाबा को थोड़े ही मालूम था ऐसे ही प्रवेश करेंगे। कितना बन्दर लगता है। कब ख्याल में भी न था। पहले तो भूल गये यह क्या होता है। मैं किसको देखता हूं तो बैठे2 उनको कशिश हो जाती है यह क्या होता है। यह शिव बाबा कशिश करते थे। उनको तो यह भी पता नहीं पड़ता था। सामने बैठो तो ध्यान में चले जाते थे। बायरे हो गये यह क्या है। इन बातों को समझने के लिए फिर एकान्त चाहिए। तब वैराग्य आने लगा। कहां जाऊं। अच्छा बनारस जाता हूं। यह उनकी कशिश थी। जो इसको भी कराते थे। इतने सभी बड़े कारोबार सभी छोड़ कर गया। इन बिचारों को क्या पता कि बनारस में क्यों जाते हैं। फिर वहां जाकर बगीचे में ठहरा। वहां भी पेंसिल हाथ में उठाकर दीवारों पर चक्र बैठ निकालता था। बाप क्या कराते थे कुछ पता नहीं पड़ता था। रात को नींद आ जाती थी तो समझता था कहां उड़ गया हूं फिर जैसे कि नीचे आ जाता था। कुछ पता नहीं क्या हो रहा है। पहले तो

अलफ का ज्ञान बुधि में बैठे। शास्त्रों का ज्ञान तो था। अहं ब्रह्मास्मि। माया के भी हम मालिक हैं ऐसे भी समझते थे। तब कहते हैं तुम्हारा पहला ज्ञान बिल्कुल ही डिफरेन्ट था। बुधि में शास्त्रों का भुसा था ना। वह कोई जल्दी थोड़े ही निकलता है। इनकाभी देरी से निकला। शुरू में कितने सा० होते थे। बच्चियां बैठी2 चली जाती थी। बाबा ने खास बच्चों का स्कुल बनाया था। अभी फिर ख्याल होता है बच्चों का क्लास बनावें। वहां छोटे2 बच्चे थे। अभी तो बड़े बच्चों का बनावें। ऐसे तो नहीं होगा फिर ध्यान में चले जावेंगे। यह तो बड़ी कुमारियां आद हैं। पता नहीं क्या पार्ट चलेगा। उस समय तुम्हारा भी नाभाचार हो जावेगा ना। शुरू में तुमने बहुत हा खेल पालदेखे हैं। कहेंगे जो हमने देखा है सो तुमने नहीं देखा। अभी भी बाप कहते हैं जिन्होंने देखा वह तो चले गये अभी फिर जो तुम देखेंगे यह फिर वह नहीं देखेंगे। पिछाड़ी में बाप बहुत ही सा० करेंगे। नजदीक होते जावेंगे ना। फिरवा मौत मलुका शिकार। तुम मलुक बन जाते हो। प्रैक्टीकल नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मलूक बन जाते हो। जो फिर सा० करते हो पिछाड़ी में कैसे अवस्था रहती है। बिल्कुल निश्चय बुधि। भल कुछ भी हो जाये जरा भी घबरायेंगे नहीं। ऐसी अवस्था आने वाली है। इसलिए अच्छी रीत समझते जाओ। टाईम बहुत थोड़ा है। पुरुषार्थ करते जाओ। यह है ईश्वरीय परिवार। बाहर में तो यह परिवार नहीं रहता। कर के एक घंटा आपस में मिलते हैं। सेन्टर पर जाते हैं बाकी तो असुरों के साथ रहना पड़ता है। जंगली जनावर बन्दर भूतरां देखते रहेंगे। शास्त्रों में भी क्या2 बातें लिख दी है। अभी तो तुम समझते हो भक्ति मार्ग के शास्त्रपढ़ते कितना टाईमवेस्ट होता गया। वेस्ट आफ टाईम, वेस्ट आफ इनर्जी, वेस्ट आफ मनी किया है। वाह्यात बातें सुनते2 सत2 करतेखुश होते थे। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के कथारें। भक्ति में क्या लाभ पड़ा है। अभी फिर ज्ञान में चकना चुर बनना है। भक्ति मार्ग में भी कोई बहुत तीखे भक्त होते हैं। उनको नवधा भक्ति कहते हैं। यह फिर है नवधा योग। जिसमें कष्ट कटते हैं। नालेज तो बहुत ही सहज है। बच्चों को समझाते तो बहुत हैं। अभी कोई विकर्म नहीं करना है। रावण राज्य योगबल से खत्म हो जाता जावेगा। ड्रामा अनुसार रावण राज्य खत्म होना ही है। सतयुग में रावण होता ही नहीं। सूर्यवंशी ही राजधानी चलती है। वहां यह भी पता नहीं रहता कि हमारे पीछे चन्द्रवंशी आवेंगे। फिर यह होंगे कुछ भी पता नहीं। यहां है दुःख की दुनिया। वहां है सुख की दुनिया। यह फर्क हो जाता। मुंझना न चाहिए। जो वहां जाने वाले ही नहीं हैं वह मुंझते हैं। उनका भी दोष नहीं। इसलिए तुम कोई बात में बिगड़ते नहीं हैं। जानते हो बचारे बेसमझ हैं। प्राईम-मिनिस्टर आबुझ है। उनको वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी का ज्ञान ही नहीं। चक्र को जानते ही नहीं। अभी तुमको कितनी समझ मिली है। अभी तुम बच्चों की बुधि में है हम 84 का चक्र पूरा कर के आये हैं। अगर कम चक्र लगाया है तो याद में भी कम रहेंगे। जितना चक्र कम लगाया होगा उतना ही योग में कम रहेंगे। क्योंकि पीछे आये हैं ना। किसको समझा नहीं सकते हैं। आवेंगे भी पीछे। त्रेता के पीछे। तुम बच्चों को बेहद बाप द्वारा बेहद की समझ मिलती है। नटशेल में बीज और झाड़ की समझ गये हो। स्वदर्शनचक्र बुधि में फिरता रहता है। इस चक्र से तुम्हारे पाप कटते हैं। स्वदर्शनचक्र फिराते रहो पाप कट होते जावेंगे। उन्हों ने फिर कृष्ण को स्वदर्शनचक्र दिखाया है जिससे सभी का गला कटता गया। ऐसी तो बात है नहीं। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अन्त में स्वदर्शनचक्र धारी बन रही है। तो पाप कट जाये। ज्ञान भी है स्वदर्शनचक्र भी फिराते हैं। शिव बाबा तो चक्र नहीं फिराते हैं। ब्राह्मण फिराते हैं। जिससे विकर्म विनाश हो। फिर तुम देवता बन जावेंगे। स्वदर्शनचक्र का तुमको ज्ञान मिला है। यह (देवी-देवता) बनने लिए। यह है एमआबजेक्ट। तुम जानते हो हम स्वदर्शनचक्र फिरा कर देवता बन रहे हैं। फिर 5000हजार वर्ष बाद तुमको यह ज्ञान मिलेगा। देवताओं को भी यह ज्ञान नहीं है। तो कहेंगे यह फिर क्या कहते हैं। अपने लिए समझते हैं हमारे में ज्ञान है। बाकी सभी के लिए कहते हैं कोई में ज्ञाननहीं हैं। इसलिए कोई की भी आंख नहीं खुलती। जो अच्छे बच्चे समझदार हैंवह तो झट समझ जाते हैं। कोई भी संशयहोगा तो निकल जावेंगे। रिफ्रेश हो जावेंगे। बाप मुझ निकाल देते हैं। इसलिए ही मधुबन का गायन है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।